मुहम्मद तुगलक की असफलता के कारण
(CAUSES RESPONSIBLE FOR MUHAMMAD TUGHLAQ'S FAILURE)

मुहम्मद तुगलक का सम्पूर्ण शासन काल असफलताओं की दुःखद गाथा है। उसकी सद्भावनाएँ जनकल्याण के आदर्श तथा प्रशासनिक सुधारों की योजनाओं का दुःखद अंत हुआ। यह भी संयोग की बात है कि उसे अकाल तथा महामारी का सामना करना पड़ा जिसने उसकी असफलता में योगदान दिया। लेकिन सम्पूर्ण घटना-क्रमों का अध्ययन करने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी असफलताओं के लिए विपरीत परिस्थितियों के साथ-साथ वह स्वयं भी उत्तरदायी था। किसी सीमा तक विपरीत परिस्थितियों के निर्माण के लिए भी वह उत्तरदायी था। प्राकृतिक आपदाओं का प्रबन्धन भी ठीक से नहीं किया गया जिससे उनके दुष्प्रभाव में वृद्धि हुई और सुल्तान की लोकप्रियता घटती गई और उसके शत्रुओं की संख्या बढ़ती गई। इस प्रकार उसकी असफलता अनेक कारणों का सम्मिलित परिणाम थी।

1. **अव्यावहारिकता**—सुल्तान कल्पनाशील व्यक्ति था और उसकी योजनायें मौलिक थीं। राजधानी का परिवर्तन, सांकेतिक मुद्रा आदि उसकी योजनाओं में कोई अन्तर्निहित दोष नहीं था लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वयन दोषपूर्ण था। उसने प्रजा को, अपने अधिकारियों को समझाने तथा अपने साथ लेकर चलने का प्रयास नहीं किया। इससे योजनायें असफल हुईं, राजकोष रिक्त हो गया और प्रजा को असहनीय कष्ट उठाने पड़े।

2. **योग्य परामर्शदाताओं का अभाव**—सुल्तान को प्रशासन कार्य के संचालन के लिए कोई योग्य परामर्शदाता प्राप्त नहीं हुआ। अलाउद्दीन खिलजी को योग्य और निष्ठावान अधिकारियों जैसे—उलुग खाँ, जफर खाँ, नुसरत खाँ, अल्प खाँ, मलिक काफूर और कोतवाल अलाउलमुल्क का परामर्श तथा सेवायें प्राप्त थीं और उसकी सफलताओं में उनका योगदान था। मुहम्मद तुगलक को इस प्रकार के निष्ठावान योग्य परामर्शदाता प्राप्त नहीं हुए जो उसे निर्भयतापूर्वक समयानुकूल परामर्श देते और हानिकारक कार्यों से उसे बचाते। सुल्तान स्वयं इस कमी को जानता था और उसने बरनी से यह स्वीकार किया था कि उसे योग्य वजीर की सेवायें प्राप्त नहीं थीं। इसका परिणाम यह हुआ कि उसकी नीतियों के बारे में संदेह बढ़ता गया और उसे जनता तथा अधिकारियों का सहयोग नहीं मिला।

3. **कठोर दण्ड नीति**—मुहम्मद की असफलता का एक प्रमुख कारण उसकी कठोर दण्ड नीति थी। वह साधारण अपराधों के लिए भी मृत्यु दण्ड देता था जिसके कारण जनता में उसके प्रति भय और घृणा की भावनायें उत्पन्न हो गई थीं। प्रशासन की सफलता के लिए क्षमा और दण्ड में संतुलन आवश्यक था और साथ ही जनता का सुल्तान की न्यायप्रियता में विश्वास होना भी आवश्यक था। दुर्भाग्य से सुल्तान की कठोर दण्ड प्रणाली के कारण स्थिति बिगड़ी। वह कठोर दण्ड के द्वारा लोगों को आज्ञाकारी बनाना चाहता था लेकिन इसका परिणाम विपरीत हुआ और अशान्ति तथा अराजकता बढ़ती गई।

4. **धार्मिक नीति**—सुल्तान की धार्मिक नीति से उलेमा वर्ग रुष्ट था। सुल्तान दण्ड देने के मामले में साधारण व्यक्तियों और उलेमाओं में कोई अन्तर नहीं करता था। सुल्तान का विचार था कि यह वर्ग स्वार्थी तथा चापलूस हो गया है और समाज तथा राज्य के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करता है। सुल्तान ने इस वर्ग के लोगों को सेना तथा प्रशासन में कार्य करने के लिए विवश किया। सुल्तान की विशिष्ट इस्लामी विचारधारा और प्रगतिशील विचारों के कारण यह वर्ग उसे काफिर समझने लगा। इस वर्ग का जनता पर प्रभाव था जिससे जनता भी सुल्तान की विरोधी हो गयी।

5. **अमीरों का विरोध**—अमीर वर्ग के विरोध के कारण सुल्तान को असफल होना पड़ा। सुल्तान ने अमीरों की नियुक्तियों में दो परिवर्तन किये थे। **प्रथम,** उसने साधारण व्यक्तियों को जो योग्यता रखते थे, अमीर पदों पर नियुक्त किया। इससे अमीरों का वंशानुगत वर्ग उससे रुष्ट हो गया। **दूसरे,** सुल्तान ने विदेशियों को उच्च पदों पर नियुक्त किया। ये विदेशी धन-लोलुप और स्वार्थी थे और वे केवल धन बटोरने के लिए भारत

आये थे। इस वर्ग की कृतघ्नता के कारण सुल्तान की कठिनाइयाँ बढ़ीं और उसका शासन काल असफल हो गया।

6. **प्रजा की रूढ़िवादिता और पिछड़ापन**—सुल्तान मुहम्मद का दुर्भाग्य था कि उसे प्रजा का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। जनता उसकी प्रगतिशील योजनाओं को समझने में असमर्थ रही। सुल्तान की कार्य-शैली भी सफलता के लिए अनुपयुक्त थी। उसके उतावलेपन तथा जल्दबाजी के कारण जनता को उसके प्रति संदेह हो गया जिससे सुल्तान को जनता का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। इस स्थिति में सुल्तान का असफल होना अवश्यम्भावी हो गया।

7. **प्राकृतिक आपदाएँ**—मुहम्मद तुगलक की असफलता का कारण प्राकृतिक आपदायें भी थीं। दोआब के व्यापक और भीषण अकाल के कारण राज्य को अपरिमित राजस्व की हानि उठानी पड़ी जिससे आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। दक्षिण में महामारी फैलने से सुल्तान माबर का विद्रोह नहीं दबा सका जिससे अन्य विद्रोहियों को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। कराचल में वर्षा और बर्फ के कारण उसकी सेना नष्ट हो गई जिससे सुल्तान की सैनिक शक्ति दुर्बल हो गई। यह सत्य है कि प्राकृतिक प्रकोप पर सुल्तान का कोई नियंत्रण नहीं था लेकिन बुद्धिमत्तापूर्वक इनके दुष्परिणामों को कम किया जा सकता था।

8. **सुल्तान का चरित्र**—अनेक बाह्य परिस्थितियों के कारण सुल्तान मुहम्मद को असफलताओं का सामना करना पड़ा। लेकिन उसकी असफलता का मूल कारण उसका चरित्र था। उसमें ऐसे दोषों का आधिक्य था जिनके कारण किसी भी शासक को सफलता मिलना असम्भव हो जाता। **पहली बात** यह थी कि वह स्वभाव से हठी और उतावला था। वह शीघ्र ही क्रोधित हो जाता था। अत: किसी को साहस नहीं होता था कि वह सुल्तान को परामर्श दे सके। थोड़ा-सा भी विरोध होने पर भी वह मानसिक संतुलन खो बैठता था और निरपराध व्यक्तियों को भी कठोर दण्ड दे बैठता था। उसने कभी भी अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया। उसके कर्मचारी भी उसके अस्थिर स्वभाव से भयभीत रहते थे। **दूसरे**, उसमें धैर्य और संयम की कमी थी। किसी नीति को क्रियान्वित करने के लिए धैर्य और विचार की आवश्यकता होती है। सुल्तान ने अपनी नीतियों के परिणामों पर कभी भी गम्भीरता से विचार नहीं किया और थोड़ी-सी भी असफलता पर अपनी योजना को त्याग देता था। उसने अपनी योजनाओं तथा नीतियों के दोषों को जाँचने का कभी प्रयास नहीं किया। **तीसरी** बात यह थी कि वह अव्यावहारिक सिद्धान्तवादी था और उसमें सामान्य बुद्धि का अभाव था। **डॉ. ए. एल. श्रीवास्तव** लिखते हैं कि "उसमें संतुलन, व्यावहारिक निर्णय-शक्ति तथा सामान्य बुद्धि का अभाव था। धर्मशास्त्र की शिक्षाओं का उस पर अत्यधिक प्रभाव था और उसके ज्ञान का आधार पुस्तकें थीं, न कि व्यावहारिक जीवन का अनुभव।" **चतुर्थ**, उसमें मानवीय चरित्र को परखने का गुण नहीं था जो प्रशासन की सफलता के लिए बहुत आवश्यक है। वह न तो योग्य व्यक्तियों को नियुक्त कर सका और न अपने अधिकारियों को प्रोत्साहित कर सका। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि सुल्तान और उसके अधिकारियों में निरन्तर असहयोग की स्थिति बनी रही। इसमें संदेह नहीं कि सुल्तान जनता का कल्याण करना चाहता था और उसके कार्य सद्भावना से प्रेरित थे लेकिन जब प्रत्येक कदम पर उसे असफलता मिलने लगी तो वह समझने लगा कि उसकी उदारता के बदले में उसे जनता तथा अधिकारियों से कृतघ्नता तथा विरोध प्राप्त हो रहा था। इससे उसका क्रोध बढ़ता गया और इसके फलस्वरूप उसमें दण्डों की कठोरता भी बढ़ती गयी। इस प्रकार एक शुभ कामनाओं वाला सुल्तान अपनी प्रजा से दूर होता गया और उसका 26 साल का शासन काल एक दीर्घ दु:ख-गाथा बन गया।